Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

परिवर्तनकामी चेतना का संवाहकः राकेश 'वत्स'
('एक बुद्ध और' कहानी संग्रह के सन्दर्भ में)

ईश्वर सिंह सागवाल

ऐसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी) बी.ए.आर.जनता कॉलेज, कौल जिला कैथल हरियाणा

सारांशः

हिन्दी साहित्य समाज में सक्रिय कहानी की अवधारणा के प्रस्तोता और साहित्य पत्रिका 'मंच' के सम्पादक के रूप में लोकप्रिय हुए राकेश 'वत्स' जी का हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है । इन्हें कई प्रांतीय और केन्द्रीय स्तर के पुरस्कार भी हासिल हुए । वैसे तो 'वत्स' जी ने विविध विधाओं पर अपनी लेखनी सफलतापूर्वक चलाई, लेकिन जैसा कि हम मानते है कि पाठक एवं लेखक के मध्य का सर्वाधिक सम्प्रेषणीयता का सक्षम साधन कहानी ही है । जीवन का जितना वास्तविक एवं सार्थक चित्रण कहानी साहित्य में सम्भव है, उतना साहित्य की किसी भी अन्य विधा में नहीं । 'वत्स' जी ने छः कहानी संग्रह लिखें जिनमें से कुछ कहानी संग्रहों को पुरस्कृत भी किया गया है ।

प्रस्तावना :–

'एक बुद्ध और' सक्रिय कहानी की अवधारण के प्रस्तोता का पांचवा कहानी संग्रह है । जो कि 1986 में लिखा गया और पुरस्कृत भी हुआ । इस कहानी संग्रह में 1976 से 1985 तक की तेरह कहानियाँ संकलित है । यह समकालीन कहानी का परिचय देने वाला एक महत्त्वपूर्ण संग्रह है । आज की कहानी हमारी जिन्दगी की क्रूर वास्तविकताओं को उदघाटित् करने और जनचेतना को जगाने तथा उसे संघर्ष की अभीष्ट दिशा में सक्रिय करने में संलग्न है । राकेश 'वत्स' के इस संग्रह की कहानियाँ समकालीन यथार्थ के विभिन्न रूपों से न केवल परिचय कराती है बल्कि यथास्थिति को तोड़कर परिवर्तन की वह दिशा भी स्पष्ट करती है, जो आज की आवश्यकता है ।

इस कहानी संग्रह की पहली कहानी 'अकालग्रस्त' एक विचारोत्तेजक और मार्मिक कहानी है । जिनकी आत्मा में सामान्यजन का दुःख पीड़ा नही उत्पन्न कर पाता वे भी यदि इसे पढ़े तो विचलित हो उठेंगे । राकेश जी की ही विशेषता है कि उन्होंने अकालग्रस्त दामोदर और उसकी पत्नी नन्दिनी का जो करूण इतिवृत प्रस्तुत किया है उसमें कहीं भी अतिरिक्त रूप से कोई प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश नहीं की गई है । अकाल की पीड़ा झेलता हुआ दामोदर अन्ततः अपनी पत्नी को गांव के ठेकेदार की वासना पूर्ति के लिए भेजने को तैयार हो जाता है । इस मनःस्थिति को तैयार करने में उसे बड़ा संघर्ष करना पड़ा है, अपने स्वभाव और संस्कार से । वह एक अहम सवाल उठाता है–"वह कौन सी चीज है जो आदमी को एकदम अपने स्वभाव और संस्कार से काट देती है," 'भूख' हाँ, उस भूख ने ही सब खत्म कर दिया, चरित्र, धर्म, इज्जत आदि । पर यह भूख उसकी अपनी न थी । उसके बच्चों की थी । बच्चों की भूख और बिलबिलाहट वह न सह सका और बच्चों की भूख दामोदर और नन्दिनी को बुरी तरह तोड़ दिया और उन्हें ऐसे बिन्दु पर खड़ा कर दिया, जहां नन्दिनी के लिए ठेकेदार की विलासिनी बनकर एवज में बच्चों के लिए भोजन प्राप्त करने के अलावा कोई चारा न था । कहानीकार ने इस बिन्दु पर दामोदर की मनोदशा का जो सोचपरक दृश्यात्मक चित्रण किया है वह बहुत ही मार्मिक है और कहानी का वह हिस्सा है जो किसी भी संघर्षशील मनुष्य के घटाटोप पथ में जीवन को नई रोशनी देता है । कहानी का अन्त उसके तीसरे भाव दृश्य से जुड़ा हुआ है जिसमें वह यह देखता है कि नन्दिनी ने ठेकेदार की अंकशाखिनी

Title :*परिवर्तनकामी चेतना का संवाहकः राकेश 'वत्स' ('एक बुद्ध और' कहानी संग्रह के सन्दर्भ में)*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *ईश्वर सिंह सागवाल* yr:2013 vol:2 iss:10

होने की बजाय पेट पर शराब की टूटी बोतल से वार कर दिया है । जिसने भी सच्चरित्रा के पथ पर चलकर जिन्दगी गुजारी है यदि वह कभी परिस्थितिवश किसी पतन के गर्त में गिरता है तो अन्तिम दम तक बचने का रास्ता वो ढूंढता रहता है । शोषण और अत्याचार के इस माहौल में कहानीकार ने न केवल नन्दिनी को उभारा है बल्कि एक पूरे समाज को सचेत होने का सम्बल भी दिया है ।

संग्रह की दूसरी कहानी 'उफान' में कहानीकार ने दाम्पत्य के टकराव और बिखराव के मुहाने तक पहुंचाकर जिस तरह एकाएक तालमेल के साथ आंगन तक पहुंचाया है, वह स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के दो दिलचस्प कोणों को सामने रखता है । कहानी के आरम्भ में पति सोचता है कि वह पिछले बीस साल से यह महसूस करता आ रहा है कि वह जिन्दगी की बदबूदार दलदल में गले तक फंसा हुआ है । अब वह इससे बाहर आना चाहता है और सोचता है बाकी के साल अपने लिए सिर्फ अपने लिए जीए । पति-पत्नी एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते है । यहां तक कि पत्नी अपने पति को उसके वकील मित्र के सामने ही नंपुसक तक कह देती है । वकील मित्र कहते है अगर ऐसी बात थी तो आपके ये दो-दो बच्चें कैसे?इस पर वह मात्र संयोग बताती है । यही नहीं वह अपने पति के वेश्याओं से सम्बन्धों की बात भी कहती है । पति उसे चरित्रहीन आदि अपमानजनक शब्दों से सम्बोधित करता है । वकील मित्र देखते है कि स्थिति सुलझने की बजाय उलझती जा रही है तो वह उन्हें समझानें की गरज से कहता है-"देखिए भाभी जी, मैं अभी तक आप दोनों और आपकी स्थितियों को जो समझ पाया हूँ, उसका नतीजा यही निकलता है कि अब आप दोनों को किसी भी स्तर पर एक-दूसरे की जरूरत नहीं है । आप लोग एक-दूसरे से पूरी तरह उब चुके हैं । शरीर की भूख खत्म हो जाने पर, जब कोई आन्तरिक या आत्मिक लगाव नहीं होता तो ऐसा ही होता है, तय है कि आप एक-दूसरे से छुटकारा पाना चाहते है । मेरा सुझाव है कि यह काम आप पढ़े-लिखे लोगों की तरह गरिमापूर्ण ढंग से और लोगों को बिना टिकट का तमाशा दिखाए बिना भी कर सकते है और आपको ऐसा ही करना चाहिए ।" इस पर भी वे एक-दूसरे को भला-बुरा कहने से नहीं रूकते, स्थिति यहां तक आ जाती है कि पति उसे 'सिर फोड़ दूंगा' जैसे शब्द कहने लगता है । इस पर पत्नी सब्जी काटने वाली छुरी हाथ में उठाकर मानो खंजरी बनी खड़ी थी और कह रही थी, 'आओ, जरा आगे तो बढ़ो, अब रूक क्यों गए? इस सारी स्थिति को देखकर वकील मित्र को लगा जैसे, दोनों इसी वक्त एक-दूसरे को छोड़ देंगे । वह उठा और दोनों के बीच मध्यस्थता छोड़कर 'बाथरूम' के बहाने कमरे से बाहर हो गया । लेकिन जब वह लौटकर आया तो देखकर हैरान रह गया । पति हाथ में बड़ी सी बाल्टी लिए आंगन के पौधों को बडी ही तन्मयता के सींच रहा था और पत्नी दीवार पर कैलेंडर टांगने के लिए कील गाड़ने की कोशिश कर रही थी । इस प्रकार 'वत्स' जी की इस कहानी में पति-पत्नी के परस्पर आरोप-प्रत्यारोप का उफान का विचित्र है और बाद में एकाएक तालमेल के आंगन तक लाया गया है ।

संग्रह की तीसरी कहानी 'छुटकारा' में भावात्मकता की बौद्धिकता पर विजय दिखाई गई है । कहानी का नायक विजय मां की किसी बात को ध्यान से नहीं सुनता बल्कि वह अपने बडप्पन के नशे में बहकता रहता है । कभी शहर के नामी-गरामी अमीर लोगों की बाते । अपने स्कूटर के चोरी हो जाने और किसी मंत्री की सिफारिश से पुलिस के विशेषरूप से सरगर्म हो जाने पर उसके पुनः मिल जाने की घटना का अहमन्यता से भरा वर्णन । कभी अपने दोनों बच्चों की पढ़ाई में होशियार होने और चंदा के बहुत ही समझदार तथा पराक्रमी होने की गवाहियां । इसके साथ ही छिट-पुट रूप में और भी जाने क्या-क्या?जब मां अपनी बेटी कौशल्या की बेटी नीलम की शादी की बात विजय को सुनाती है और कहती है कि इस प्रकार के मौकों पर तो लोग अपनी बेटियों को देते ही है । इस पर वह मां को समझाने की गरज से कहता है कि इन पाखंडों का और फिजुल-शोषण का इस 'माडर्न- जमाने में कोई अर्थ नहीं- "बस ये ही वे रीति-रिवाज है जिन्होंने हमारे समाज को अपमानित बना रखा है । पहले दहेज के लिए किसी से कर्ज लो, फिर साल भर आते रहने वाले त्यौहारों के लिए कही से जुगाड़ जुटाओं, उसके बाद लड़की के बेटे-बेटियों की शादी और अन्त में लड़की के मरने के पूरे-पूरे संस्कार और फिर बात यहीं तक नहीं रूकती, आगे बेटी के बेटे-बेटियों की औलादें और फिर उनकी औलादें-हूं कितना पाखंडवाद है इस सबमें ।" इस तरह वह पुरानी परम्पराओं को पाखंड आदि कहकर नकारता है और हर चीज को पैसे की तराजु से तोलता है । वस्तुतः 'छुटकारा' परम्परा और परिवर्तन के बीच फंसे परिवार के मनोसंघर्ष को बयान करती हुई कहानी है ।

संग्रह की चौथी कहानी 'छुट्टी का दिन' अभावग्रस्त जिन्दगी किस तरह कदम-कदम पर दुःख पीड़ा, झुंझलाहट और उपेक्षा के दंश झेलती रहती है । इसका तीखा एहसाहस कराती है । छुट्टी का एक दिन बिताने के लिए निकलता हुआ, एक मिल मजदूर का परिवार जाने किन-किन चीजों को ललचाई निगाहों से देखता हुआ थका, बेहाल घर लौट आता है । इसी सबका मार्मिक चित्रण हुआ है इस कहानी में । चलते-चलते पत्नी अपने बचपन को याद करती है । वह भी अभावों से भरा था । उस समय उसने सोचा था कि शादी होने पर उसकी इच्छाएं पूरी हो जायेगी, पर उसे क्या पता था कि उसका पति कपड़े की मिल से बोरे और पट्टियां ढोने वाला एक साधारण मजदूर होगा । गरीबों के सपने ऐसे ही होते है । बाजार में एक जगह पति-पत्नी की बातचीत का अंश दिखाया गया है, वह कहानी को और भी मार्मिक बनाता है । चलते-चलते पति पूछता है- तू शहर से कुछ

खरीदना चाहती थी? पत्नी ने उत्साहहीन आवाज में कहा, "मेरी ये धोती बुरी तरह फट गई है ।" पति ने कहा– हाँ–हाँ तुम्हें धोती जरूर खरीद लेनी चाहिए । कितने में आएगी?पत्नी– कोई सस्ती सी ले लो किसी सस्ती सी दुकान से । "अरे सस्ती से काहे को लेंगे ।" पत्नी कहती है–"आपके कारखानें में महंगें कपड़ों के साथ सस्ती धोतियां भी बनाई जातीं, तो कोई फिकर न रहती," पति कहता है–"फिर क्या था, तुम्हारे लिए धोती छांटकर लाता पूरे लाट में से, लेकिन कारखानें में तो सिर्फ पलस्टर और टैरीकॉट ही बनते है ।" पलस्टर की धोती?यह कहकर पति हंसने लगा, पत्नी की भी हंसी फूट पड़ी और बोली–'क्यों, मैं क्या पलस्टर के भी लैक नहीं, मां को हंसते देख तीनों बच्चें भी अनारों की तरह दरक उठे और बेमतलब गिदगिदानें लगें । ये पंक्तियाँ यथार्थ का तीखा एहसास कराती हैं । अभावग्रस्त मनुष्य की मनोदशा का जैसा चित्रण यहां हुआ है वह प्रेमचन्द की ही कहानियों में देखने को मिलता है । अपनी मां की हल्की सी हंसी देखकर उसे 'गिदगिदाने' वाले ये वे बच्चे है जो बाजार में चीजों को टुकर–टुकर ताकते हुए, भीड़ का धक्का खाते हुए आगे बढ़ते रहे । इन बच्चों की असली हालत क्या है?, वे ककड़ी के टुकड़े खा रहे हैं । ककड़ी के टुकड़े हाथ में आते ही तीनों बच्चें भूखी गाय की तरह उनको खाने लगे । पत्नी टुकड़ा हथेली पर आते ही उसे किसी नायाब चीज की तरह निहारने लगी । विकास का ढिंढोरा पीटने वाली सरकार यह नहीं देख पाती कि समाज में ऐसे भी लोग है जो जीने के लिए कर्मक्षेत्र में जबरदस्त संघर्ष कर रहे हैं, पर जीने के सुख से और दूर होते जा रहे हैं । इस मजदूर ने छुट्टी का दिन क्या बिताया, मानो, उसने सबके सामने अपनी फटैहाली का तमाशा दिखाया और अपना मन बहलाने की जगह अभाव का निरन्तर कषैला घूंट घूंटा । इस प्रकार यह कहानी निम्न मध्यवर्गीय परिवार की पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी है, जो सम–कालीन यथार्थ के विभिन्न रूपों से परिचय कराती है ।

'समूहगान' कहानी गौतम नाम के खुंखार आतंकवादी की कहानी है जो यह सत्य उद्घाटित करती है कि जब तक जनसमूह आंतकवाद के दृश्यों का मूक–दर्शक बना रहता है तब तक वह (आंतकवाद) फलता–फूलता रहता है किन्तु जब समूह उस पर टूट पड़ता है तब उसका खात्मा होकर ही रहता है । राकेश 'वत्स' ने बड़े कौशल से यह रेखांकित किया है कि समूह–शक्ति को ऐन वक्त पर जागृत करने का कार्य भी महत्त्वपूर्ण है । जिस समय जनता गुस्से में थी, उस समय यदि रिक्शेवाले ने गौतम की बुदबुदाहट 'सालयो' । एक–एक को कुत्ते की मौत न मारा तो मेरा नाम गौतम नही" को साहस करके लोगों से आकर न बताया होता तो गौतम का वह अंत न हो पाता, जो हुआ । उपर से देखने पर रिक्शावाले की भूमिका बहुत मामुली है किन्तु गहराई से विचार करने पर पता चलेगा कि उसी की सार्थक भूमिका है। रिक्शेवाले ने वह कार्य किया है जो घने अंधेरे में रोशनी की एक किरण करती है । राकेश 'वत्स' ने इस कहानी में गौतम की आंतकवादी हरकतों का जैसा वर्णन किया है वह दिल को हिला देने वाला है । यह कहानी जहां गौतम के आंतकवादी चरित्र को उजागर करती है वहीं यह सवाल भी उठाती है, अगर बदमाशों और गुण्ड़ों का आंतक इसी तरह बिना किसी रोक–टोक के बढ़ता रहा तो यह देश कितने दिन शान्ति से जी सकेगा? आखिर जनता इतनी कायर और ड़रपोक क्यों हो गई है कि अपनी गर्दन पर ठंड़ी छुरी सटी होने के बावजूद रत्तीभर हरकत या चिन्ता नहीं दिखा रही?कहना न होगा कहानी अन्त में इस सवाल का जबाब तलाशती है । सकारात्मक लेखक की उपलब्धि यहीं है कि वह महज प्रश्न न उठाये बल्कि उससे टकराने की ताकत भी उत्पन्न करे ।

संग्रह की कहानी 'दूसरी औरत' एक सुन्दर स्त्री में दूसरी स्त्री बदजबान, कठोर स्वभाव वाली का रूप दर्शाया गया है । रेलगाड़ी में 'रिजर्व बर्थ' पर बैठी और किस तरह से सभी के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है । हर एक उससे बात करने का बहाना ढूंढ रहा है । मगर वह किसी की तरफ ध्यान नहीं देती । मगर जब एक बूढ़ा व्यक्ति उसकी बर्थ पर बैठ जाता है तो वह उसके साथ गुस्से में बात करती है और उसे उठाने के लिए उस पर चिल्लाती है तो उसका चेहरा तमतमा उठा । उस समय उसकी आवाज का उसके सुन्दर शरीर के साथ रत्तीभर भी कोई मेल नहीं था । यह सब वह खुद नहीं बोल रही बल्कि उसके अन्दर की कोई दूसरी क्रूर और बदसूरत औरत बोल रही है । इस प्रकार कहानी में एक सुन्दर स्त्री में एक कठोर और बदसूरत स्त्री को दिखाया गया है । संग्रह की अगली कथा 'पुरूष पक्ष' और 'स्थगित' पारिवारिक सम्बन्धों के इर्द–गिर्द घूमती ऐसी कहानियाँ हैं, जिनके पात्र हमारे समाज के उस वर्ग के प्रतिनिधि है जो अपने दायरों में बंधा हुआ, तमाम उम्र उन्हीं के चक्कर काटता रहता है । 'पुरूषपक्ष' एक अजीबोगरीब दम्पति की कहानी है, जिसमें पत्नी बसन्ती मोटी और कुरूप है । इसलिए उसकी शादी बनवारी जैसे मामूली क्लर्क से कर दी जाती है, जो कि उसे फुटी आंख नहीं भाता, क्योंकि उसकी शक्ल न तो देवानन्द के साथ मिलती थी, न धर्मेन्द्र के साथ । दूर से देखने पर वह हू–बहू कन्हैयालाल लगता था, जो उसे बिल्कुल पसंद नहीं था । इसलिए वह बनवारी से घर का सारा काम करवाती है और उसे खानें में जली रोटियों के साथ कद्दू की सब्जी दिया करती है । बनवारी के दुःखों का अन्त नहीं है, अभी तो उसके सामने रात का संकट बाकी था । बड़े–बड़े दांतों वाली कलूटी एक हथिनी के इशारों पर उसे सरकसी डांस करना था । कहानी में होता यह है कि बनवारी सुबह सार्वजनिक नल से पानी लाने के लिए बाल्टी लेकर जाता है, उसकी थोड़ी सी लापरवाही से वह बाल्टी चोरी हो जाती है और वह पत्नी के डरके मारे घर से भाग जाता है । अंततोगत्वा उसको हथिनी जैसी बीवी दफ्तर में धर दबोचती है । इस तरह यह कहानी पढ़कर

पाठक का दिल ठहाके लगाने को करता है । इसी प्रकार 'स्थगित' कहानी में चन्द्रमोहन का अपने बूढें माँ–बाप से पीछा छुड़ने की ललक का चित्रण है, जो पुरानी परम्पराओं, रूढ़ियों और तौर–तरीकों से पल्ला झाड़ना चाहता है मगर भावनात्मक बेड़ियाँ उसे आजाद नहीं होने देती ।

संग्रह की अगली कहानी 'कर्फ्यू' संकलन की सर्वाधिक सशक्त कहानी है । जो पंजाब के तीन–चार वर्षो के घटना क्रम की दु:खद परिणति को एक व्यक्ति के माध्यम से उजागर करती है । सामूहिक यंत्रणा को एक व्यक्ति की यंत्रणा के माध्यम से बयान लिया गया है । इस कहानी को एक हद तक भावुकता से ग्रस्त कहा जा सकता है । यह 'कर्फ्यू' के आंतकवादी और अत्याचारपूर्ण माहौल को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है और यह दिखाती है कि ऐसे माहौल में हरमिन्दर सिंह जैसा व्यक्ति अपनी बीवी और बच्चों में खो जाने या बे–मौत मारे जाने की चिन्ता से व्यथित होता हुआ अन्त में पुलिसवालों की क्रूरता और विवेकहीनता का शिकार हो जाता है । सांप्रदायिक दंगा भड़काने वाले लोग अगर इन स्थितियों पर गंभीरतापूर्वक विचार करें, तो हो सकता है कि वे अपनी घिनौनी हरकतों से बाज आ जाएं । लेकिन दु:ख तो इस बात का है कि 'कर्फ्यू' जैसी कई कहानियाँ लिखकर भी लेखक दानवता के संरक्षकों को कोई सबक नही सीखा पा रहा है । इस तरह कहानी पंजाब के उस घटनाक्रम को दर्शाती है । जिस समय पंजाब में आंतकवाद पूरे जोरों पर फैला हुआ था । उसमें 'कर्फ्यू' के कारण आम जनता पुलिस वालों की क्रूरता और विवेकहीनता का शिकार हो रही थी। वस्तुतः कहानी में 'वत्स' जी ने हालात का यथार्थ चित्रण किया है ।

'खामियाजा' संग्रह की ऐसी कहानी है जिसमें एक व्यक्ति नि:सन्तान होने के कारण एक जवान लड़की को और वह भी अमीरजादी को गोद ले लेता है । जिसके लिए उसे अपनों और परायों की तीखी नुक्ताचीनी का शिकार होना पड़ा । सभी की जबान पर एक ही सवाल था कि यह क्या तुक है?गोद लेना था तो बुढापें के सहारे किसी गरीब लड़के को लेते । बहुत से विरोधियों ने तो उसके चरित्र पर भी तरह–तरह के लांछन लगाये । मगर जब लड़की एम.ए. पास करते ही शादी करने की इच्छा जाहिर करती है तो उसकी शादी भी बड़े ठाठ के साथ की जाती है लेकिन बेटी शादी के बाद विदेश चली जाती है । आज वह अकेला है । उसे लगा जैसे उसका सुख–चैन भी उसी के साथ विदेश विदा हो गया है । घर की हर चीज में उसे सुनीता की तस्वीर दिखाई देती है । आज वह सोचता है कि इस बुढापे की अवस्था में उसको सम्भालने वाला कोई नहीं है । एक विरजा नाम का नौकर उसकी देखभाल करता है तो सहसा उनको बिल्कुल ने लेकिन काफी गहरे एहसास ने अन्दर तक कचोंटा–काश उन्होंने विरजा जैसे ही किसी अनाथ बच्चे को गोद लिया होता और वे इस बात से डरे न होते कि कोई भी उन पर किसी और तरह का बहुत ही अभद्र और गंदा लांछन न लगा दें । इस प्रकार कहानी के अन्त में आते–आते डॉ. वर्मा को इस बात का एहसास होने लगता है कि जो भूल उसने सुनीता को गोद लेने की थी शायद वह आज उसी का खामियाजा भुगत रहा है ।

'दल्ले' समूह की भ्रष्टाचार के विविध स्तरो को उद्घाटित करने वाली कहानी है । कहानी का प्रतिपाद्य यह है कि सब जगह दलाल ही दलाल हैं, सब झांसा ही देते है–कोर्ट, कहचरी, नेता, सब किसी न किसी साजिश के ही अंग हैं । दीनदयाल ने मकान खरीदेने के लिए 500 रुपये एंडवास दिया था । मकान न मिलने की हालत में उन्होंने जब उसे वापिस लेना चाहा तो कोर्ट, कहचरी, थाना–पुलिस सब तक दौड़ लगाई, किन्तु हर जगह हर किसी न किसी ने उसको झांसा ही दिया । यही है हमारा समाज और हमारी न्याय व्यवस्था । इसमें हयादार आदमी चैन से सांस नहीं ले सकता, कोई अपनी सीधी राह नहीं चल सकता । सीधी राह को भी टेढ़ी कर देने वाले बहुतेरे हैं । दीनदयाल जहां तक सम्भव होता है अपने रुपयों को पाने के लिए दौड़ लगाता है, किन्तु अंत में मकान छोडकर, दुनिया का असली चेहरा देखकर, अपने घर वापस आ जाता है । इस कहानी की सीमा यह है कि यथार्थ का सही चित्रण प्रस्तुत करके शान्त हो जाती है । लगता है किसी भटके हुए आदमी को तमाम कंकरीटे–पथरीले रास्ते से गुजारकर एक ऐसे अंधे मोड़ पर छोड़ दिया, जहां से वह जाने की दिशा ही नहीं तलाश पाता है । इस तरह कहानी में पुलिस, वकील, नेता और नौकरशाही के बहुरूपी पैंतरें नजर आते है । जिनकी चालों में फँसकर व्यक्ति अनचाही पराजय स्वीकार करने को विवश हो जाता है ।

संग्रह की अगली कहानी 'अमावस' में एक ऐसे परिवार की कथा है जो कि पित्तरों को खुश करने के लिए अमावश के दिन अन्तिम श्राद्वको आहुति देने के लिए ब्याह की अन्तिम निशानी एक छोटे से गहने को गिरवी रखकर चीजों का जुगाड़ बनाते हैं और नासमझ बच्चे कहीं पवित्र रसोई को अपवित्र न कर दें, इस डर से उन्हें रोशनदान वाली अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया जाता है । कहानी में राकेश 'वत्स' ने दिखाया है कि किस प्रकार श्राद्वके दिनों में पंड़ितों के मिलने की मुश्किल हो जाती है और इसका पंड़ित भरपूर फायदा उठाते हैं । "क्यों, मिलेंगे क्यों नहीं?चार पैसे ज्यादा ले लेंगे यही ना–...होना क्या था? पुजारी जी को एक रुपया घूस का दिया और डेढ़ रुपया पंड़ित जी को दक्षिणा देने का वायदा किया तो कहीं जाकर पंड़ित मिला है ।" कहानी में पंड़ित घर में बनी सारी खीर और परांठे इत्यादि सारी चीजें खा जाता है और बेचारे बच्चों को खीर का बर्तन धोकर धोवन की आधी–आधी कटोरियों में ही संतोष करना पड़ा । कहानी अंत में जाकर बड़ी मार्मिक हो जाती है जब खाने को कुछ नही बचता तो पत्नी पति के हाथ पर अठन्नी रखकर बोली, "जाओ भागकर बाजार से

अपने लिए कुछ खाने को ले आओ" –"अरे नही, आज अमावश का 'बरत' ही सही । कौन सा काम पर गये हैं जो भूख लगेगी" लेकिन अन्त में एक और पंड़ित आता है और पहले पंड़ित को शुद्र बताते हुए कहता है, "उसे पंड़ित किसने बना दिया?वह तो शुद्र है और सड़क पर रोड़ा कूटने का काम करता है, अब जाकर दक्षिणा में से अठन्नी पुजारी को देगा । मुझे तो पुजारी जी ने, न्यौता जीमने भेजा है ।"और वह बची हुई अठन्नी भी वह पंड़ित ले जाता है । इस तरह कहानी मानवीय संवेदना पैदा करती है और आर्थिक तंगी में दबे पिसे लोगों की जड़–धर्म–भावना पर आघात करती है । प्रकारान्तर से यह कहानी धर्म के उस स्वरुप पर आक्रमण करती है तो एक ढोंग या रूढ़ि के रूप में मनुष्य की जिजीविषा को चूस लेती है ।

संग्रह की अन्तिम कहानी 'एक बुद्धऔर' में मास्टर कपिलदेव वर्मा जब अपने आसपास के गन्दे माहौल को ठीक करने के लिए डाक्टर, नगरपालिका आदि तक दौड़धूप करके थक जाता है । तब सीधी कार्यवाही करने का निर्णय लेते हैं । उन्हें किसी अदृश्य शक्ति से प्रेरणा मिलती है– "किसी भी बड़े काम को सम्पन्न करने के लिए बलिदान देना होता है और बलिदान देने वाले लोग ही अपने युग का मसीहा होते हैं ।" इस संकल्प या भावना के साथ जब से सभी भ्रष्टाचारियों, यहां तक कि अपने विद्यालय के मैनेजमैन्ट के भ्रष्ट प्रधान और सैक्रेटरी के नामों को गत्ते पर लिखकर उद्घाटित करता है तब उन्हें नौकरी से बिना सूचना दिये स्कूल न आने के झूठे आरोप में निकाल दिया जाता है । कहानीकार ने अन्तिम वाक्य लिखा है कि–"अब मास्टर कपिलदेव वर्मा आजाद या महात्मा बुद्धकी तरह घर–परिवार से निश्चित होकर दुनिया और दुनियादारों के लिए सत्य की खोज करें, सोये हुए इन्सानों को जगायें । प्रश्न यह पैदा होता है कि नौकरी से लिकाल दिये जाने पर कपिलदेव के सामने जो अन्य परेशानियाँ आएगी उनका क्या होगा?" वैसे सामाजिक परिवर्तन का संकल्प लेने के बाद ये बाते गौण हो जाती हैं । यदि इसे स्वीकार कर लिया जाए तो कहना पडेगा कि इस संग्रह की कहानी अन्याय के खिलाफ संघर्ष की चेतना देती है ।

अन्त में हम कह सकते है कि कुल मिलाकर राकेश 'वत्स' के इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ अन्याय, शोषण, विषमता, अन्धविश्वास और अमानवीयता के खिलाफ जन भावना को जागृत करती हैं और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को पुष्ट करने में भी मदद करती है ।

---

[1]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 10 ।
[2]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 19 ।
[3]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 26 ।
[4]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 32 ।
[5]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 44 ।
[6]राकेश 'वत्स', 'एक बुद्धऔर' पृ. 58 ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net